प्रकाशन तिथि : 15 अक्टूबर, 2021
प्रेषण तिथि : 19 अक्टूबर, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 15 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

राजपूत समाज और कांग्रेस पार्टी विषय पर विचार गोष्ठी संपन्न

राजस्थान में आजादी के बाद बने राजनीतिक माहौल में कांग्रेस पार्टी ने राजपूत समाज की उपेक्षा की और परिणाम स्वरूप राजपूत कांग्रेस के विरोध में लामबद्ध हुआ और उसके विरोध में जो भी आया उसको स्थापित करने में अपना तन, मन व धन दिया और कांग्रेस के समक्ष एक सशक्त विपक्ष तैयार किया जो अब अनेक बार सत्ता पक्ष भी बन गया है। लेकिन कालांतर में समाज के लोगों ने कांग्रेस पार्टी में भी स्थान बनाया लेकिन समाज रूप में कांग्रेस से अन्य दलों की तरह जुड़ाव विकसित नहीं हो पाया। विगत वर्षों में समाज के लोगों ने कांग्रेस पार्टी का भरपूर सहयोग किया। जहां से भी कांग्रेस से राजपूत को टिकट दी उसको समाज का पूरा साथ मिला। विगत विधान सभा चुनावों में समाज के सहयोग से पार्टी सत्ता में आई। अजमेर में लोकसभा के उपचुनाव में समाज के लोगों ने घोषित रूप से कांग्रेस के समर्थन में मतदान किया। खींवसर, मंडावा, सहाड़ा और राजसमंद की सीटों पर हुए विधानसभा उपचुनावों

में समाज के लोगों ने कांग्रेसी उम्मीदवारों को वोट दिए और कांग्रेस की स्थिति इन चुनावों में अपने विपक्षी से इक्कीस रही। लेकिन क्या कांग्रेस ने हमारे इस सहयोग को सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया? क्या कांग्रेस हमारे समाज के लोगों को इस सहयोग के अनुरूप प्रतिनिधित्व देती है? क्यों आम राजपूत कांग्रेस को अपना नहीं मान पाता? क्यों कांग्रेस राजपूत समाज के सहयोग को स्वीकार नहीं कर पाती? कांग्रेस में काम करने वाले राजपूत राजनीतिक कार्यकर्ता इसके लिए क्या कर सकते हैं? कांग्रेस पार्टी में काम करने वाले राजपूत क्या समाज रूप में अपनी ताकत का अहसास वहाँ करवा पाते है? इन सब प्रश्नों के आलोक में 10 अक्टूबर को श्री प्रताप फाउंडेशन के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में राजपूत समाज और कांग्रेस पार्टी विषय पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। विचारगोष्ठी में लगभग 25 जिलों से कांग्रेस में काम करने वाले राजनीतिक कार्यकर्ता शामिल हुए। बैठक में राज्य सरकार के केबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, राज्य मंत्री भंवरसिंह भाटी, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता धर्मेंद्र सिंह राठौड़, पूर्व सांसद गोपाल सिंह इड़वा, प्रदेश कांग्रेस कमेटी सचिव महेंद्र सिंह खेड़ी, विक्रमसिंह मूंडरु, महेन्द्र सिंह रलावता सहित लगभग 200 लोग शामिल हुए। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

विचार गोष्ठी में संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के उद्बोधन का संपादित अंश

आज का यह कार्यक्रम आपका ही कार्यक्रम है, आप के द्वारा ही यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है और आप ही इसमें सम्मिलित हुए हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ ने जो अनुषांगिक संस्थाएं बना रखी हैं, उन के माध्यम से इस प्रकार के कार्यों में सहयोग करने की हमारी इच्छा रहती है। ऐसी बैठकें करने में भी आप ही का प्रयत्न काम में आएगा चाहे नागौर में करें, जालौर में करें, अलवर में करें या जयपुर में करें। थोड़ा सा यह देखना पड़ेगा कि हमारे इन संगठनों में से कौन व्यक्ति स्पेयर है, उनको भेजा जाये। सभी को भेजना संभव नहीं है। काम अभी बहुत करना है और काम अभी बहुत होगा लेकिन यह काम सरल नहीं है। बहुत कठिनाइयां आएंगी। जैसे अपने घर से निकलकर हम फील्ड में जाएंगे तब बहुत समस्याएं आयेंगी जो बिल्कुल सामने ही दिखती हैं। मुझे दिखती हैं तो आपको भी दिख जायेंगी। राजपूतों को प्रतिनिधित्व देने के लिए कांग्रेस से मुलाकात करें, आप और हम सभी, और हमारी बात मान ली जाय, कुछ जगह हमारा प्रतिनिधित्व मिल जाए - चाहे संगठन में मिले या ग्रामीण विकास संस्थाएं हैं उनमें मिले, लेकिन जो समस्या आएगी वह यह है कि आप ही लोगों को पार्टियों द्वारा इस प्रकार से समझाया जाएगा, जो कांग्रेस के हैं उनको भी जो बीजेपी के हैं उनको भी, कि आप कांग्रेस का समर्थन कर रहे हैं और कांग्रेस बहुमत में ना आए तो आपका हाल क्या होगा? ना इधर के रहेंगे ना उधर के रहेंगे। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

'इतिहास हमारी प्रेरणा: गहन व तथ्यात्मक अध्ययन कर आगे बढ़ें'

राणा पूंजा जी सोलंकी की जयंती मनाई

इतिहास हमारी प्रेरणा का अक्षय स्रोत है, जिनका इतिहास मिटा दिया जाता है उनका प्रेरणा प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है इसलिए हमें इतिहास का गहन एवं तथ्यात्मक अध्ययन करना चाहिए और उससे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए। हमारी इस रत्नगर्भा कौम में महापुरुषों की अटूट श्रृंखला रही है, यह कौम एक के बाद एक महापुरुष पैदा करती रही है क्योंकि त्याग और बलिदान हमारा नैसर्गिक गुण रहा है। कालांतर में इन त्याग और बलिदान के भावों में न्यूनता आई और तभी से हम पतनोन्मुखी हो गये। पूज्य तनसिंह जी ने आज से 75 वर्ष पूर्व इस स्थिति को पहचाना एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। 5 अक्टूबर को पाली जिले में देसुरी के निकट मेवी कलां गांव के महादेव मंदिर के प्रांगण में पाली प्रांत द्वारा आयोजित राणा पूंजा जी सोलंकी जयंती समारोह को संबोधित करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ अभ्यास और वैराग्य के मार्ग द्वारा अपने संपर्क में आने वाले समाज बंधुओं का सुप्त क्षत्रियत्व जागृत करता है। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

कैसे बदली राणा पूंजा की पहचान

गुजरात में सोलंकी राज्य के पतन के बाद इस वंश की एक शाखा अजमेर जिले के भिनाय क्षेत्र में आकर रही। वहाँ से पहन्द्रवीं शती के अंतिम वर्षों में मेवाड़ के राणा रायमल के काल में सोलंकी भोजराज के पुत्र गोड़ा के बेटे मेवाड़ आए। दो पुत्रों - शंकरसिंह और सामंत सिंह को राणा रायमल ने झीलवाड़ा और रूपनगर की जागीरें दी। सन् 1478 ई. में एक अन्य पुत्र रावत अखैराज ने मेवाड़ के भोमट क्षेत्र में आकर पानरवा के यादव राजपूत ठाकुर जीवराज को अपदस्थ कर अपना अधिकार स्थापित किया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

नोखा क्षेत्र में आपराधिक गठबंधन के खिलाफ ज्ञापन सौंपे

बीकानेर जिले के नोखा क्षेत्र में विगत वर्षों में राजनेताओं, पुलिस प्रशासन व अपराधियों के बीच गठबंधन के कारण अनेक आपराधिक घटनाएं हुई हैं। अपराधी सार्वजनिक रूप से ऐसी घटनाओं को अंजाम देकर आमजन में खौफ पैदा कर रहे हैं जिससे उनके खिलाफ कोई खड़ा नहीं हो और इसीलिए चुनाव लड़ने वाले लोगों को विशेष रूप से निशाना बनाया जा रहा है। प्रशासन और राजनेताओं की शह के कारण अपराधियों पर कोई गंभीर कार्यवाही नहीं होती और इससे यह खौफ दृढ होता जा रहा है। विगत 7 अक्टूबर को हिमटसर के सरपंच मेघसिंह के साथ ऐसी ही घटना हुई। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के 'बदलते दृश्य' प्रकरण में मेवाड़ से संबंधित महाराणा राजसिंह के संदर्भ में।

महाराणा राजसिंह वि.सं. 1706 को मेवाड़ के शासक बने। शासक बनने के बाद चित्तौड़ दुर्ग के मरम्मत कार्य और चित्तौड़ के नजदीक के परगनों को शाही सीमा में मिला लिए जाने के कारण महाराणा राजसिंह और शाहजहां में विरोध हो चला था। उसी समय शाहजहां के बीमार पड़ने पर उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर उसके चारों पुत्रों में संघर्ष प्रारम्भ हो गया। औरंगजेब ने इस अवसर पर महाराणा राजसिंह से सहयोग की याचना की। मुगलों के आन्तरिक संघर्ष सुअवसर जानकर महाराणा राजसिंह ने मेवाड़ के परगनों को पुनः प्राप्त करने का अभियान छेड़ दिया। सर्वप्रथम मांडलगढ़ पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया गया। उसके बाद दरीबा, बनेड़ा, जहाजपुर, शाहपुरा, सावर, केकड़ी पर अधिकार कर लिया और उन्हें पुनः मेवाड़ में मिला लिया। इसके बाद महाराणा ने टोंक, सांभर, लालसोट और चाटसू पर आक्रमण कर वहां से कर वसूला। उत्तराधिकारी संघर्ष में विजयी होने के बाद औरंगजेब बादशाह बना उसके शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में उसके महाराणा राजसिंह के साथ संबंध मित्रतापूर्ण बने रहे। किशनगढ़ के शासक रूपसिंह की मृत्यु के बाद उनका पुत्र मानसिंह किशनगढ़ का शासक बना, उसकी बहिन चारुमति के सौन्दर्य के बारे में सुनकर औरंगजेब ने उससे विवाह का प्रस्ताव किशनगढ़ भेजा। विवश मानसिंह को यह प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा, चारुमति को जब इस विवाह प्रस्ताव का पता चला तो उसने पत्र द्वारा महाराणा राजसिंह को संदेश भेजा कि आप मुझसे विवाह कर मेरे धर्म की रक्षा करें। महाराणा राजसिंह ने तुरन्त एक छोटी सी सेना साथ लेकर किशनगढ़ जा कर चारुमति से विवाह किया। औरंगजेब को जब इस बात का पता चला तो क्रोध में पागल हो उठा, लेकिन उस समय वो कुछ ना कर पाया परन्तु इसके बाद वह महाराणा राजसिंह के प्रति द्वेषभाव रखने लगा। सिरोही के राव अखैराज के पुत्र उदयभाण ने राज्य के लालच में अपने पिता को कैद कर लिया, महाराणा राजसिंह को जब यह पता चला तो राणावत रामसिंह के नेतृत्व में उन्होंने एक सेना सिरोही भेजी और उदयभाण को सिरोही से निकाल कर अखैराज को पुनः शासक बनाया। शासक बनने के बाद औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता लगातार बढ़ती गई। शासक बनने के बाद वि.सं. 1726 ई. में उसने हिन्दू मंदिरों को तोड़ने की एक आज्ञा निकाली और इसके लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किए, स्थान-स्थान पर मंदिर तोड़े जाने लगे। गोवर्धन से द्वारकाधीश की मूर्ति की महाराणा राजसिंह ने काकंरोली में प्रतिष्ठा करवाई। औरंगजेब के विरोध को दरकिनार करते हुए श्रीनाथ जी की मूर्ति को नाथद्वारा में प्रतिष्ठा करवाई। चारुमति से विवाह की घटना से नाराज औरंगजेब अब महाराणा राजसिंह से और अधिक नाराज हो गया। वि.सं. 1736 में उनसे हिन्दुओं पर जजिया कर लागू कर दिया। औरंगजेब के इन कृत्यों ने राजपूत शासकों को उसके विरुद्ध कर दिया। महाराणा राजसिंह ने औरंगजेब को एक पत्र लिखा जिसमें चुनौती दी कि वह रामसिंह (आमेर शासक) और महाराणा राजसिंह से जजिया कर वसूल करके बताए। उधर महाराजा जसवंतसिंह की मृत्यु के बाद औरंगजेब की दृष्टता को जानते हुए वीर दुर्गादास जी ने बालक अजीतसिंह को महाराणा राजसिंह की सुरक्षा में भेज दिया। महाराणा ने उसे केलवे सहित 12 गांवों की जागीर देकर उसकी सुरक्षा की। औरंगजेब ने महाराणा राजसिंह से बार-बार अजीतसिंह को सौंपने की मांग की, परन्तु महाराणा ने उसकी बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया। इन सभी घटनाओं से क्रुद्ध औरंगजेब ने विशाल सेना के साथ वि.सं. 1736 में मेवाड़ पर चढ़ाई की। महाराणा राजसिंह ने अपने सामन्तों की सलाह अनुसार पहाड़ों में रहकर छापामार युद्ध करने का निश्चय किया। औरंगजेब ने अजमेर से तहव्वर खां और हसन अली खां को महाराणा पर आक्रमण के लिए भेजा और स्वयं उदयपुर की ओर गया। शहजादे मुअज्जम खां, रुहल्ला खां, इक्का ताज खां के साथ उदयपुर पहुंचा जहां उन्होंने उदयपुर को खाली पाया। जब मुगल जगदीश मंदिर को तोड़ने आगे बढ़े तो मंदिर की रक्षा के लिए नियुक्त बीस राजपूतों ने अपने से कई गुणा अधिक मुगलों को मारकर वीरगति प्राप्त की। एक अवसर पर औरंगजेब राजपूती सेना से घिर गया, उसका सैन्य साजो समान लूट लिया गया वह स्वयं बड़ी मुश्किल से प्राण बचा कर वहां से भागा था। उसके बाद वह वापिस अजमेर लौट गया। राजपूती सेना अब पहाड़ों से अचानक निकलती और अलग-अलग स्थानों पर बनी मुगलों की चौकियों पर आक्रमण कर उन्हें नुकसान पहुंचा कर वापिस पहाड़ों में लौट जाते। मुगल सेना इतनी अधिक भयभीत हो गई थी कि शाही थानों की थानेदारी स्वीकार करने से अक्सर आना-कानी करने लग गए। कुंवर भीमसिंह ने मुगलों के अनेक थानों को नष्ट कर दिया। महाराणा ने शहजादे अकबर की सेना पर आक्रमण कर सेना को नष्ट कर दिया। इस प्रकार शाही सेना का पहला अभियान असफल सिद्ध हुआ। मुगलों के दूसरे सैन्य अभियान में शहजादा अकबर को देसूरी के घाटे से कुम्भलगढ़ की ओर आक्रमण करना था लेकिन राजपूतों के भय से तहव्वर खां लम्बे समय तक नाडोल ही रहा। शहजादे अकबर के दबाव से उसे आगे बढ़ना पड़ा जहां कुंवार भीमसिंह ने मुगल सेना पर आक्रमण कर बहुत मुगलों को बहुत हानि पहुंचाई। महाराणा की आज्ञा से कुंवार भीमसिंह ने गुजरात की ओर अभियान किया जहां पहले ईडर का विध्वंस किया, फिर बडनगर पर आक्रमण कर वहां मुगल अधिकारियों से 40000 रुपए दण्ड में वसूल किए, उसके बाद अहमदनगर पर आक्रमण कर वहां से भी दण्ड वसूल किया। महाराणा ने राठौड़ सांवलदास को बदनोर पर आक्रमण के लिए भेजा। राठौड़ सांवलदास ने वहां मुगलों पर ऐसा भीषण आक्रमण किया कि शाही सेनापति रुहिल्ला खां अपने 14000 सैनिकों के साथ अपना सारा साजो सामान छोड़कर वहां से भाग निकला और औरंगजेब के पास अजमेर पहुंच गया। शक्तावत केसरीसिंह के पुत्र गंगादास ने चित्तौड़ के पास ठहरी शाही सेना पर मात्र 500 सवारों के साथ आक्रमण किया और अपने पराक्रम से शाही सेना को युद्ध क्षेत्र से भागने पर मजबूर कर दिया और शाही सेना के 18 हाथी, 2 घोड़े और कई ऊंट छीनकर महाराणा के नजर किए। महाराणा की आज्ञा से कुंवार गजसिंह ने बेगूं पर आक्रमण कर उसे तहस-नहस कर दिया। राजपूतों की छोटी-छोटी सैन्य टुकड़ियों के अचानक आक्रमणों ने मुगलों को भयंकर नुकसान पहुंचाया। शाही सेना राजपूतों से भयभीत हो चुकी थी और उनका मनोबल टूट चुका था। अपनी सेना की ऐसी दशा देखकर पराजित औरंगजेब ने महाराणा राजसिंह से शांति वार्ता शुरू की। इसी समय देवयोग से वि.सं. 1737 को कार्तिक सुदी 10 को महाराणा राजसिंह का स्वर्गवास हो गया।

सन्दर्भः (1) वीर विनोद : कविराज श्यामलदास।
(2) उदयपुर का इतिहास : गौरीशंकर हीराचन्द ओझा।

-खींवसिंह सुल्ताना

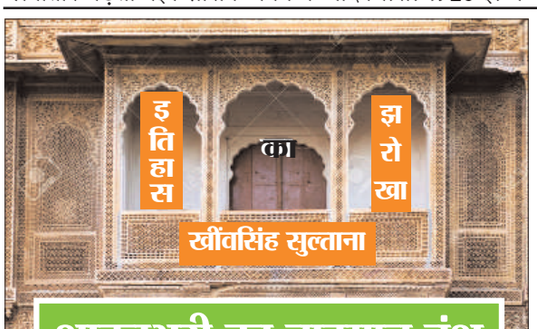

शाकम्भरी का चाहमान वंश

चन्दनराज के बाद उसका पुत्र वाक्पतिराज शासक बना। पृथ्वीराज विजय ग्रन्थ में वास्पतिराज को अनेक युद्धों का विजेता बताया गया है। हर्षनाथ के लेख में उसे महाराज की उपाधि से संबोधित किया गया है जो चौहानों के बढ़ते राजनीतिक प्रभुत्व का प्रमाण है। भाग्यवश वाक्पतिराज उस समय सांभर का शासक बना जब राष्ट्रकूटों से लगातार उत्तर भारत में सैन्य अभियान कर प्रतिहारों की शक्ति को जर्जरित कर दिया था। वाक्पतिराज ने समय का लाभ उठाते हुए राज्य विस्तार किया और प्रतिहारों के राज्य के अनेक भाग अपने राज्य में मिला लिया। प्रतिहार नरेश महिपाल के एक सेनानायक तंत्रपाल ने वाक्पतिराज पर आक्रमण किया परन्तु उसे पराजय का सामना करना पड़ा, इस विजय से वाक्पतिराज के यश में वृद्धि हुई। वाक्पतिराज के पास तीव्रगामी अश्वों की एक शक्तिशाली सेना थी। अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने के लिए वाक्पतिराज ने चन्देलों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किया। बिजौलिया लेख में उसे 'विन्ध्यपति' कहा गया है, संभवतः उसने मेवाड़ के बिजौलिया पर विजय प्राप्त की थी। इस प्रकार वाक्पतिराज एक शक्तिशाली शासक था। सर्वप्रथम उसी ने शाकम्भरी के चाहमनों में महाराज की उपाधि धारण की थी, वह शिव का उपासक था जिसने पुष्कर में एक भव्य शिव मंदिर का निर्माण करवाया था। वाक्पतिराज के बाद विन्ध्यराज और उसके बाद सिंहराज शाकम्भरी का शासक बना। दसवीं शताब्दी के मध्य से प्रतिहारों की शक्ति का ह्रास प्रारम्भ हो गया था। देवपाल के बाद प्रतिहार साम्राज्य विघटन के कगार पर था, इस काल में शाकम्भरी नरेश सिंहराज ने प्रतिहारों की अधीनता से मुक्त होने का जोरदार प्रयास किया। उसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की और प्रतिहार शासक की अवज्ञा की।

प्रतिहार शासक देवपाल अथवा विजयपाल ने पुनः चाहमानों के अधीनता में लाने के लिए सिंहराज के विरुद्ध सेना भेजी, जिसे सिंहराज ने अपने युद्ध कौशल और पराक्रम से पराजित कर खदेड़ दिया तथा तोमरवंशी सलवण की हत्या कर उसके कई सहायकों को बंदी बना लिया तब प्रतिहार नरेश को स्वयं सिंहराज के सम्मुख उपस्थित होकर उनकी मुक्ति के लिए प्रार्थना करनी पड़ी, जिसका उल्लेख हर्ष प्रस्तर लेख में मिलता है। सिंहराज के नेतृत्व में चाहमान संप्रभु साम्राज्य की स्थापना के लिए तीव्र प्रयास कर रहे थे तथा प्रतिहार शासक उन्हें नियंत्रित करने में असमर्थ थे। सिंहराज के बाद उसका पुत्र विग्रहराज द्वितीय शासक बना। विग्रहराज द्वितीय प्रारंभिक चाहमान शासकों में बड़ा प्रभुत्वशाली और योग्य शासक था इसके समय के 973 ई. के हर्षनाथ लेख से इसकी उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

पृथ्वीराज विजय तथा प्रबंध चिन्तामणि से ज्ञात होता है विग्रहराज ने गुजरात पर आक्रमण किया और वहां के शासक मूलराज को परास्त किया, पराजित मूलराज ने भाग कर कन्धा दुर्ग में शरण ली। इस विजय के उपलक्ष्य में विग्रहराज ने भृगुकच्छ में आशापुरी देवी के मंदिर का निर्माण करवाया। विग्रहराज एक शक्तिशाली शासक था जिसने दक्षिण में नर्मदा तक सैनिक अभियान किए। सच्चे अर्थों में वही अपने वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था।

(क्रमशः)

उत्तरप्रदेश व गुजरात में प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

मोरना

भीमराणा

उत्तरप्रदेश के बिजनौर जिले के मोरना गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय शिविर 1 से 4 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। संभागप्रमुख मदन सिंह बामणिया ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि संघ का कार्य प्रचार-प्रसार का नहीं बल्कि जीवन बदलने का कार्य है। इसके लिए त्याग और तपस्या की आवश्यकता है, कष्टों को सहने की क्षमता की आवश्यकता है जो सरल नहीं है। इसीलिए संघ का कार्य दीर्घकालीन लेकिन सुनिश्चित परिणाम वाला है। शिविर में अमरोहा, ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद और बिजनौर क्षेत्र के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुजरात में कच्छ संभाग में द्वारका जिले के भीमराणा गांव में 1 से 3 अक्टूबर की अवधि में दो प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हुआ। एक इनमें एक शिविर बालिकाओं का व एक बालकों का रहा। बालिका शिविर का संचालन करते हुए उर्मिला बा पछेगाम ने कहा कि हमने जिस कौम में जन्म लिया है उस कौम की माताओं ने जौहर जैसे बलिदान देकर भी अपने कुल के गौरव की रक्षा की। संघ हमें उसी त्याग और बलिदान की शिक्षा दे रहा है जिससे हम अपनी आने वाली पीढ़ी को गौरव प्रदान कर सकें। इसी प्रकार बालकों के शिविर का संचालन करते हुए छनुभा पछेगाम ने शिविरार्थियों से कहा कि जीवन केवल भोग की दौड़ में नष्ट करने के लिए नहीं है। यह ईश्वर की दी हुई अमूल्य धरोहर है जिसको सहेजकर उसका सदुपयोग करना हमारा कर्त्तव्य है। संघ हमें उसी का अभ्यास करवा रहा है। तीन दिवसीय शिविरों में भीमराणा, सरकला, भावनगर आदि से बालक-बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शक्ति सिंह कोटड़ा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

शहीद राजेन्द्र सिंह मोहनगढ़ का बलिदान दिवस

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक शहीद राजेन्द्र सिंह मोहनगढ़ का बलिदान दिवस उनकी जन्मस्थली मोहनगढ़ में 28 सितंबर को आयोजित किया गया। कार्यक्रम शहीद संस्थान के तत्वावधान में ग्रामवासियों, जनप्रतिनिधियों व भामाशाहों के सहयोग से सम्पन्न हुआ। संघ के संभागप्रमुख तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि शहीद राजेन्द्र सिंह ने एक सच्चे क्षत्रिय का जीवन जिया है। अपने पूर्वजों के बताए मार्ग का अनुसरण करते हुए उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए हैं। उन्होंने कहा कि राजेंद्र सिंह बहुत ही उत्साही स्वयंसेवक थे। उन्हें जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाती, वे उसे पूरे समर्पण से निभाते थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे अनमोल हीरो को तराशता है और उन्हें राष्ट्र और समाज की सेवा में नियोजित करने का कार्य करता है। कार्यक्रम को जिला प्रमुख प्रताप सिंह रामगढ़, पूर्व विधायक सांग सिंह, पूर्व जिला प्रमुख अंजना धनदे, मोहनगढ़ प्रधान कृष्णा चौधरी ने भी संबोधित किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बैरसियाला, गंगा सिंह तेजमालता, सांवल सिंह मोढा, हिंदू सिंह म्याजलार भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सहयोग करने वाले भामाशाहों को सम्मानित भी किया गया।

आचीणा व कुचामन में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फांउडेशन की बैठक

नागौर में खींवसर क्षेत्र के आचीणा गांव में 10 अक्टूबर को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जय सिंह सागुबडी ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फांउडेशन की स्थापना और उद्देश्य के बारे मे विस्तार से बताते हुए कहा कि समाज की वर्तमान परिस्थितियों मे लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने के लिए फाउंडेशन की स्थापना की गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की आवश्यकता और महत्व बताते हुये संघ की संस्कार निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी और सभी को श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुडकर सहयोगी बनने का आह्वान किया । बैठक में रघुवीर सिंह , केशर सिंह पांचलासिद्धा, श्रवण सिंह आचीणा, राजेंद्र सिंह पांचलासिद्धा, जब्बर सिंह दौलतपुरा, गोविंद सिंह आचीणा आदि उपस्थित रहे। इससे पूर्व 3 अक्टूबर को आयुवान निकेतन, कुचामन में कुचामन शहर में निवासरत समाज बंधुओं की बैठक रखी गई जिसमें विस्तार से श्री क्षत्रिय युवक संघ, श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जानकारी दी गई।

सम्पर्क कार्यक्रम व बैठकें

गुजरात के बनासकांठा व मेहसाणा प्रान्त में 3 अक्टूबर को हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में संपर्क यात्राओं का आयोजन हुआ। मेहसाणा प्रांत में जास्का, हिरवानी, मछावा और सुंडिया गांवों में संपर्क किया गया तथा समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली की जानकारी प्रदान की गई। बनासकांठा प्रान्त में चारडा, जादला और डेल गांवों में वाघासण में होने वाले तीन दिवसीय बालिका प्रशिक्षण शिविर के लिए संपर्क किया गया। इस दौरान प्रांतप्रमुख अजीत सिंह कुणघेर, आशापुरा चेरिटेबल ट्रस्ट पीलूड़ा के प्रमुख सिद्धराज सिंह पीलूड़ा, शैलसिंह वलादर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। संघशक्ति-पथप्रेरक के लिए सदस्यता अभियान भी चलाया गया।

थराद तहसील के जेतड़ा व सेदला गांवों में भी वाघासण शिविर के लिए 10 अक्टूबर को संपर्क यात्रा की गई जिसमें प्रांतप्रमुख सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पुणे प्रान्त का एक दिवसीय स्नेहमिलन व भ्रमण कार्यक्रम सिंहगढ़ किले पर 10 अक्टूबर को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में महाराष्ट्र संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाना ने संघ का परिचय देते हुए प्रान्त में चल रही सांघिक गतिविधियों के बारे में बताया। इस दौरान पुणे में नियमित शाखाओं को प्रारम्भ करने, संघशक्ति और पथप्रेरक के लिए सदस्यता अभियान चलाने व प्रान्त में शिविर के आयोजन के संबंध में भी चर्चा की गई।

गुजरात में भावनगर जिले के घोघा तहसील के मालपर गांव में घोघा तालुका राजपूत समाज की सामान्य सभा की बैठक हुई। इस दौरान समाज के सामने वर्तमान में उपस्थित विविध समस्याओं व चुनौतियों के बारे में चर्चा की गई और इनके निराकरण हेतु अजीतसिंह थलसर ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर और शाखाओं के माध्यम से समाज जागरण के अभियान के बारे में बताया। गोहिलवाड़ राजपूत समाज के प्रमुख वासुदेवसिंह वरतेज ने भी अपने संबोधन में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य को समाज के लिए महत्त्वपूर्ण व आवश्यक बताया।

गेडाप में स्नेहमिलन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती वर्ष में आयोजित हो रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में 03 अक्टूबर को सुजानगढ़ तहसील के गेडाप गांव में स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। रूपसिंह परावा, नरपतसिंह रताऊ, बजरंग सिंह, दिलीप सिंह गेडाप समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे।

राजपूत शिक्षा कोष द्वारा प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन

जोधपुर में कार्यरत राजपूत शिक्षा कोष द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 3 अक्टूबर को जरुरतमंद प्रतिभाशाली राजपूत विद्यार्थियों के चयन हेतु संभाग के विभिन्न जिला मुख्यालयों पर परीक्षा आयोजित की गई। इस परीक्षा के माध्यम से 11 ऐसे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन किया जाता है जिनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है और उन्हें अध्ययन को जारी रखने के लिए सहयोग की आवश्यकता है। फिर ऐसे विद्यार्थियों की कक्षा 12 तक की पढाई की व्यवस्था शिक्षा कोष द्वारा जोधपुर में की जाती है और यहीं छात्रावास में उनके रहने खाने की व्यवस्था भी शिक्षा कोष द्वारा की जाती है। उल्लेखनीय है कि संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव के निर्देशन में यह कोष संचालित है।

जापान के टोक्यो शहर में श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा का दृश्य।

संपादकीय

युद्ध, क्षत्रियत्व और अपनापन

शास्त्र हमें बताते हैं कि जो क्षय से त्राण करता है वह क्षत्रिय होता है। क्षय का अर्थ होता है हानि, कम होना, घटना, कमजोर होना आदि आदि। ऐसे में समाज को हर प्रकार की हानि से, कमजोरी से, कमी से बचाने वाला क्षत्रिय होता है। आदर्श समाज वह होता है जिसमें गुण हों, जिसमें ज्ञान हो, जिसमें धर्म हो, जिसमें प्रकाश हो और वे सभी सकारात्मक व दैवीय प्रवृत्तियां हों जो उसे श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करते हैं। ऐसे में इन सभी सकारात्मक प्रवृत्तियों की हानि से समाज को बचाना क्षत्रिय का काम बताया गया है और इसके लिए उसे अज्ञान से, अंधकार से, अवगुणों से, अन्याय से, अधर्म से समाज को बचाना पड़ता है। ऐसा करने के लिए अज्ञानी, अंधकारी, अवगुणी, अन्यायी, अधर्मी से लड़ना पड़ता है और यहीं वे युद्ध के प्रचलित स्वरूप का सहारा लेते हैं। लेकिन ये सभी नकारात्मक प्रवृत्तियां जो पहले से व्यक्ति के अंतर में मौजूद होती है और अनुकूल वातावरण में प्रकट होती हैं, फिर उसके विचारों के माध्यम से संकल्प बनती हैं और यही संकल्प जब कार्य में परिणत होता है तब व्यक्ति अन्यायी, अधर्मी या अवगुणी बनता है। ऐसे में यदि वातावरण को सुधार कर विचारों के दुषित होने की प्रक्रिया को बाधित कर दिया जाए तो संकल्प भी दुषित नहीं होंगे और परिणामस्वरूप ये नकारात्मक प्रवृत्तियां कार्य में भी परिणत नहीं होंगी। हमारे पूर्वजों का आदर्श यही रहा। उन्होंने समाज को अधर्मी, अन्यायी आदि से बचाने के लिए उससे युद्ध के साथ साथ अन्याय, अधर्म के विचार और संकल्प को पैदा करने वाले वातावरण को बदलने को भी अपना पावन कर्तव्य समझा और इसी का परिणाम है कि वेदों की अधिकांश ऋचाओं की रचना हमारे महान पूर्वजों द्वारा की गई जिन्होंने अपनी तपस्या के बल पर सृष्टि के आधारभूत सत्य का साक्षात्कार कर लिया था। इसी का परिणाम है कि भारतीय दर्शन के प्रकाश पुंज सभी उपनिषदों के रचयिता हमारे महान पूर्वज थे। इसी दायित्व बोध के कारण संसार के श्रेष्ठतम ज्ञान 'श्री मद्भगवतगीता' का अवतरण हमारे ही महान पूर्वज द्वारा हमारे ही एक अन्य पूर्वज को माध्यम बनाकर किया गया। इसी दायित्व बोध के कारण हमारे आंगन में भगवान अवतरित हुए। इसी दायित्व बोध ने जैन धर्म के चौबीसों तीर्थकरों के रूप में हमारे महान पूर्वजों ने संसार का मार्गदर्शन किया। यही दायित्व बोध राजकुमार सिद्धार्थ को बुद्ध बना देता है और यही दायित्व बोध रामदेव जी, जांभोजी, पीपाजी, मीरा बाई आदि के रूप में अवतरित होता है। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे इतिहास में वर्णित हैं जब हमारे पूर्वजों ने अपने तपोबल और ज्ञान के बल से वातावरण को इन नकारात्मक प्रवृत्तियों से दूषित होने से बचाया और क्षय से त्राण किया। एक आदर्श शासक के रूप में भी उन्होंने सदैव इस बात का ध्यान रखा कि उनके राज्य का वातावरण धर्ममय, ज्ञानमय, प्रकाशमय और अमृतमय बना रहे जिससे प्रजा के विचार और विचारों से पैदा होने वाले संकल्प शुद्ध बने रहें और दानवीय प्रवृतियां अपना सिर न उठायें। लेकिन फिर भी जब जब ऐसा हो जाता था, उनके तमाम सकारात्मक प्रयासों के बाद भी कोई अन्यायी, कोई अधर्मी या कोई आततायी सिर उठा ही लेता था तब उसे सजा देने के लिए, उसके प्रभाव से शेष वातावरण को बचाने के लिए वे उसका विनाश भी करते थे और इसके लिए वे युद्ध के प्रचलित स्वरूप का सहारा लेते थे। इस प्रकार का युद्ध उनके लिए अंतिम विकल्प होता था। जब सभी विकल्प निःशेष हो जाते थे, प्रभाविकता खो देते थे तब वे इस अंतिम विकल्प का चयन करते थे। इसीलिए हम देखते हैं कि भगवान राम युद्ध को टालने का हर संभव प्रयास करते हैं और जब सभी उपाय असफल हो जाते हैं तब युद्ध का सहारा लेते हैं और उसमें भी रावण से अंतिम युद्ध तक उसके सुधरने और समझौते की गुंजाइश को खोजते रहते हैं। ऐसा ही हम भगवान कृष्ण के जीवन में देखते हैं कि किस प्रकार वे मात्र पांच गांवों तक सीमित होकर भी युद्ध को टालने का प्रयास करते हैं। वहीं दूसरी तरफ हम देखें कि रावण की बात प्रारंभ ही युद्ध की धमकी से होती है। वह बात बात में युद्ध के लिए उन्माद प्रकट करता है और ऐसा ही दुर्योधन करता है। वह हर विषय को बाजुओं के बल से तोलने की कोशिश करता है और मांस पेशियों के बल पर ही हर समस्या का हल ढूंढना चाहता है। इससे सिद्ध होता है कि युद्ध कभी भी हमारे श्रेष्ठ पुरुषों का आदर्श नहीं रहा है, वे कभी युद्धान्मादी नहीं रहे हैं बल्कि युद्ध को अंतिम विकल्प के रूप में स्वीकार किया है और ऐसा अवसर आने पर उन्होंने पलायन नहीं किया बल्कि डटकर अधर्मी, अन्यायी और आततायी से संघर्ष किया है। लेकिन कालांतर में एक षड़यंत्र के हम शिकार हुए और तप व ज्ञान की अपेक्षा बाहुबल का युद्ध हम पर आरोपित कर दिया गया। भगवान बुद्ध के बाद तो योजनाबद्ध रूप से हमारा तप और ज्ञान द्वारा बलार्जन बाधित कर दिया गया और हमने भी ऐसा स्वीकार कर केवल बाहुबल तक सीमित रहना प्रारंभ कर दिया। मध्यकाल आते आते हमने केवल अन्यायी, अधर्मी और आततायी से युद्ध करना ही हमारा प्रमुख कर्तव्य स्वीकार कर लिया और भौतिक युद्ध जो हमारे लिए अंतिम विकल्प हुआ करता था अब प्राथमिक बन गया। अब हमने अन्याय, अधर्म, अंधकार, अवगुण आदि नकारात्मक प्रवृत्तियों को हतोत्साहित करने के लिए आवश्यक ज्ञानार्जन, तपोबलार्जन से मुख मोड़ लिया और बाहुबल के द्वारा समाज की रक्षा करने के उपक्रम में ही महारत हासिल करने को अपना दायित्व मान लिया। इस कला में हम इतने निपुण हुए कि हमने सिर कटने के बाद लड़ने के भी अनगिनत उदाहरण पेश कर दिए। जौहर और शाके हमारे लिए सामान्य बात हो गई तथा कर्तव्य पालन हेतु मरण के मंगल महोत्सव मनाये जाने लगे। वीरता के ऐसे अद्भुत उदाहरण प्रकाश में आये जिनको सुनकर लोग दांतो तले अंगुली दबा लेते हैं। विचार करें कि कैसी अद्भुत वीरता रही होगी अमरसिंह जी राठौड़ की जब शाहजहां के भरे दरबार में चारों ओर उसके लोगों की उपस्थिति में उसके साले एवं सिपहसालार को मारकर वहां से जिंदा निकल गये और फिर कैसी अद्भुत वीरता रही होगी बल्लू जी चांपावत की जो शाहजहां के घर में से उसकी सेना के घेरे के बीच से अमरसिंह जी की मृत देह को निकाल कर ले आये। ऐसे ही अद्भुत उदाहरणों से भरा पड़ा है हमारा मध्यकाल और इन्हीं अद्भुत उदाहरणों के कारण सातवीं सदी में उठी ईस्लाम की आंधी के सामने भारत बचा रहा। जिस आंधी के सामने संसार की अनेक नामी गिरामी सभ्यताएं सूखे पत्तों की तरह उड़ गई उस आंधी के सामने भारतीतया बची रही इसका सबसे बड़ा कारण हमारे तत्कालीन पूर्वजों की तलवार थी जिसे उन्होंने परिणाम की चिंता किए बिना पीढीयां खपाकर भी थामे रखा। लेकिन इतने अनुपम बलिदान और वीरता के बावजूद जिस षड़यंत्र के शिकार हम भगवान बुद्ध के बाद हुए उसके कारण हम बुद्धिबल में पिछड़ गये और हमारे इस पिछड़ने का परिणाम अंग्रेजों के समय हमारे इस महान भारत ने झेला। उन्होंने तलवार के बल से नहीं बल्कि बुद्धि के बल से इसे मिटाना शुरू किया और क्योंकि हम बुद्धि के बल में, विचार के बल में, शास्त्र के बल में क्षीण हो गये थे, इसलिए मुकाबला नहीं कर पाये और जिन्होंने हमें इस बल से विहीन करने का षड़यंत्र रच स्वयं इसकी ठेकेदारी ले ली थी उनमें ना तो वह प्रवीणता थी और ना ही वह बलिदान का भाव। वे अपनी बुद्धि के बल पर लाभ हानि के पलड़ों का आकलन कर अपना लाभ देखने में संलग्न थे और निष्काम भाव से बलिदानी परंपरा के वाहक हमारे पूर्वज इस नये प्रकार के आक्रमण को समझ नहीं पाने के कारण या तो उदासीन थे या फिर तलवार से ही मुकाबला करने को आतुर थे जिसका शत्रु न्यूनतम उपयोग कर रहा था। सदियों तक के षड़यंत्रों और उन षड़यंत्रों को नहीं समझ पाने के कारण हम शास्त्र विहीन हो गये और अंग्रेजों ने हमारे ही शास्त्रों की गलत व्याख्या कर उन्हीं के सहारे भारत को गुलाम ही नहीं बनाया बल्कि यहां की अकूत समृद्धि को लूटकर इसे कंगाल बना दिया और अपना पिछलग्गू भी बना दिया। इसी का परिणाम हुआ कि आर्यों को नस्ल माना जाने लगा, उन्हें अंग्रेजों की तरह आक्रामक स्वीकार कर लिया गया, मूल निवासी और आक्रमणकारी नाम के जुल्मे वास्तविकता माने जाने लगे, वर्णाश्रम धर्म की वैज्ञानिकता को अस्वीकार कर उसे अभिशाप बताया गया, जातियों को देश का दुर्भाग्य बताया गया और कुल मिलाकर सदियों के विकासक्रम के फलस्वरूप हमारी जो अपनी सभ्यता व संस्कृति थी उसे पुरातन, दकियानूसी, रूढ़िवादी और बेकार सिद्ध कर दिया गया। परिणाम स्वरूप अपने आपको समझदार कहने वाला देश का अग्रगण्य तबका अंग्रेजों का शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक और वैचारिक गुलाम भी बन गया जिसका दंश इस राष्ट्र ने उस समय झेला, अब झेल रहा है और निकट भविष्य में भी छुटकारा पाने की संभावना क्षीण ही है।

इस समस्या का एक मात्र उपाय हमारा (क्षत्रियों का) अपनी जड़ों की ओर लौटना है, जो अपना था उसको पहचानना है, उस अपने से हम जहां से बिछुड़े थे उसी ओर मुड़ना है और वही उपाय श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। शस्त्र से पहले शास्त्र की आवश्यकता है, विचार को शुद्ध रखने वाले वातावरण की आवश्यकता है, दुषित विचारों के कारण उत्पन्न होने वाले बूरे संकल्पों के शमन की आवश्यकता है जो हमारे पूर्वज राजर्षियों के रूप में, वेदों की ऋचाओं के रचयिता के रूप में, उपनिषदों के प्रणेता के रूप में, गीता के उपदेशक और श्रोता के रूप में, तीर्थंकरों के रूप में, बुद्ध और महावीर के रूप में किया करते थे। पूज्य तनसिंह जी ने इसी आवश्यकता को पहचाना और उस आवश्यकता की पूर्ति का प्रकल्प तैयार किया। जो पहले हमें स्वयं को उस ओर प्रवाहित करता है जो हमारा स्वयं का था, जो हमारा अपना था, जो सही अर्थों में इस भारत की आत्मा थी और फिर हमारे माध्यम से वह वातावरण तैयार करना चाहता है जिसमें ज्ञान हो, प्रकाश हो, गुण हों, अमृत हो आदि आदि। संघ चाहता है कि हम भगवान राम और भगवान कृष्ण की तरह अंतिम विकल्प के रूप में मांसपेशियों के बल का उपयोग करें, रावण और दुर्योधन की तरह केवल मांसपेशियों के बल से लड़े जाने वाले युद्ध की रट ही नहीं लगाये रहें लेकिन साथ ही इस हेतु भी तैयार करता है कि अंतिम अवसर यदि उपलब्ध हो जाये तो फिर उस युद्ध को परिणाम तक पहुंचा कर ही दम लेवें। जो षड़यंत्र भगवान बुद्ध के बाद हमारे को इस अपनेपन से दूर करने के लिए प्रारंभ हुए वे समाप्त नहीं हुए हैं, अंग्रेजों के कारण असभ्यता को ही सभ्यता मान लेने की जो हीनभावना इस देश में पनपी उससे हम भी आकंठ प्रभावित हुए हैं इसलिए उनका प्रतिगामी बल भी संघ के इन प्रयासों के विरुद्ध पूरी शक्ति से उपस्थित है इसलिए हमें अपनेपन की ओर लौटाने की संघ की गति बाधित हो रही है लेकिन फिर भी परमेश्वर की चाह और महापुरुषों का आशीर्वाद संघ को बल प्रदान कर रहा है, ऐसे में हम स्वयं हमारे लिए ही सहयोग करना शुरू कर दें तो सोने पे सुहागा संभव है।

राजपूत व राव समाज की बैठक

2 अक्टूबर को महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ (पीथळ) साहित्य समिति ददरेवा (चुरू) एवं राव समाज आसलपुर द्वारा इतिहास संरक्षण तथा संवर्धन सम्मेलन का आयोजन आसलपुर में किया गया। कार्यक्रम के दौरान पूर्वजों द्वारा दी गई विरासत के संरक्षण एवं राव समाज में कुछ वर्षों से व्याप्त निष्क्रियता के संबंध में चर्चा की गई। बीदावतों के राव महावीर सिंह, चौहानों के राव उदय सिंह के अतिरिक्त दौलत सिंह, जवानी सिंह, राजेंद्र सिंह, विक्रम सिंह, इंद्र सिंह, अमर सिंह, गोपाल सिंह आदि ने अपने विचार प्रकट किए। साहित्य समिति ददरेवा (चुरु) की तरफ से संरक्षक माधोसिंह मानपुरा द्वारा राव समाज की तरफ से व्यक्त की गई समस्याओं, शंकाओं के निराकरण पर विस्तार से बात करते हुए बताया गया कि बदलाव के समय में राव समाज को अपनी बहियों की उपयोगिता को बढ़ाना होगा। इसके लिए प्रत्येक गांव में क्षत्रिय समाज के पूर्वजों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों को सूचीबद्ध किया जाना समय की मांग है। राव समाज के बुजुर्गों द्वारा नई पीढ़ी को बहियाँ पढ़ने का प्रशिक्षण दिया जाना भी आवश्यक है। राव समाज के प्रतिनिधि जिस गांव में जाएं, उससे पूर्व गांव के लोगों को निर्धारित समय की जानकारी देवें क्योंकि वर्तमान समय में गांव में उपस्थिति कम रहती है। इतिहास की बातों को विस्तार से व सही रूप में बताया जाना आवश्यक है। उपाध्यक्ष सज्जन सिंह खेड़ी ने बताया कि आप अपने कार्य में सुधार करेंगे तो लोग विवाह-शादी में भी आपके कार्यक्रम का समय निर्धारित कर जानकारी प्राप्त करेंगे। विद्वान वक्ताओं के द्वारा किए गए इस चिंतन मनन कार्य की सभी ने उपयोगिता बताई व राव समाज ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि आज तक हम ही क्षत्रिय समाज के पास गए हैं और यह पहला अवसर है कि हमारे समाज के संरक्षक क्षत्रिय समाज की एक संस्था के प्रतिनिधि हमारी निष्क्रियता को दूर करने के लिए रावों के ऐतिहासिक गांव में आए हैं। राव समाज के अग्रणी व्यक्तियों ने आगंतुकों को ज्वाला माता के दर्शन करवाये तथा समस्त गांव की जानकारी प्रदान की।

पहचान खोकर प्रतिबद्धता नहीं

(पथप्रेरक के पत्ते पर अनाम पत्र में यह विचारोत्तेजक लेख आया है जो कमोबेश वास्तविकता को प्रकट करता है।)

तो दिल्ली एनसीआर की इतिहास विकृत करने की बीमारी आखिर ग्वालियर, दादरी व हरियाणा होते हुए पूरे भारत में तक पहुंच ही गई। हमने अरबों को 500 साल तक रोके रखा पर इस बीमारी को 5 साल भी नहीं रोक पाए। जब अरबों से लड़ रहे थे तब हमारे लक्ष्य स्पष्ट थे और दुश्मन की पहचान भी स्पष्ट थी क्योंकि उसने हरे रंग का वस्त्र पहन रखा था और हमने केसरिया। इस बार दुश्मन छुपा हुआ है और बहुत ध्यान से पहचानने की कोशिस करेंगे तो नारंगी रंग का एक कपड़ा हिलता हुआ दिखाई देगा और नारंगी तथा केसरिया में इतनी समानता है कि हमें यह यकीन भी नहीं होगा कि इस रंग के वस्त्रों वाले लोग भी हम केसरिया वालों के खिलाफ हो सकते हैं। पर यह सब हो रहा है। नारंगी वालों से पूछो तो कहेंगे कि हिन्दू एकता के लिए ही कर रहे है यह सब। कितनी बड़ी विडम्बना है, कैसा मजाक है? हिन्दू एकता राजपूत इतिहास एवं सांस्कृतिक पहचान को मिटाकर हासिल की जा रही है। जिस जाति ने सनातन धर्म की खातिर हर पीढ़ी में गर्दन कटवाने की परम्परा का निर्वहन किया- आज वह जाति सनातन से हिन्दू की तरफ आते-आते इतनी अप्रासंगिक लगने लगी कि हिन्दू एकता के लिए इस जाति की पहचान को विकृत करना या मिटाना इतना जरूरी हो गया है? अगर आप सवाल करेंगे तो जवाब में 'राजनीतिक मजबूरी' है-बोलकर आपको चुप करवाने की कोशिश होगी। फिर भी आप चुप नहीं रहेंगे तो आप पर हिन्दू विरोधी होने का और राष्ट्रीय एकता की खिलाफत करने का तमगा तो लगा ही दिया जाएगा। मतलब जिस कौम की वजह से सनातन, सनातन काल से चला आ रहा है वह आज इनको हिन्दू और राष्ट्र विरोधी भी लगने लगी। आप हिन्दू और राष्ट्रवादी तभी माने जाएंगे जब आप शांतिपूर्वक प्रतिहार राजा मिहिरभोज, पृथ्वीराज चौहान और सुहेलदेव पर अपना दावा छोड़ दें। कल फिर से आप पर दवाब होगा कि हिन्दू एकता के लिए कुछ सीमेंट और गारे की और जरूरत है इसीलिए आप अनंगपाल तोमर, महाराणा प्रताप और दुर्गादास पर भी आंखें मूंद ले। लोकदेवता रामदेवजी (मंदिर) को लेकर आप राजपूत लोग क्या करेंगे वो भी हमें (राष्ट्रवादियों) दे दें। मेरा मानना है कि फिर तो हिन्दू एकता के लिए समाजवादी पद्धति को अपनाना चाहिए। भगवान परशुराम को जनजातियों को दे देना चाहिए और रानी लक्ष्मी बाई को उस जाति की ही मान लेना चाहिए जिससे झलकारी बाई संबंध रखती थी। राजा सूरजमल को गैर जाट और शिवाजी को भी गैर मराठा घोषित कर देना चाहिए। लेकिन हिन्दू एकता की जिम्मेदारी सिर्फ हमारी है। जब लाखों की संख्या में आने वाले अरब आक्रमणकारियों से हम मुट्ठी भर होकर भी लड़े थे तब हम उन लड़ाइयों के परिणामों से परिचित थे। फिर भी हमारे पूर्वजों की आत्मा ने उनको एक आश्वासन दिया था कि अपने स्वधर्म की रक्षा करने के लिए प्राणों की आहूति देने वाले इतिहास में अमर हो जाते हैं पर दुर्भाग्य देखिए कि उन बलिदानियों को इस बात का एक छोटा सा इल्म भी नहीं था कि उनकी ऐतिहासिक अमरता पर पहचान का ऐसा संकट आएगा कि वो स्वर्ग लोग में बैठकर खुद पर हंसेंगें। केसरिया बाना पहनने से पहले से जो पूजारी ने अंतिम वाक्य बोले होंगे- 'स्वधर्म के लिए प्राणाहुति'- वो सिर्फ एक शाब्दिक खेल था। उसी पंडित की परम्परा के लोग आज एक अलग भाषा का प्रयोग कर रहे हैं जिसमें सम्पूर्ण राजपूत जाति के त्याग और बलिदान को सिर्फ मुगल-राजपूत वैवाहिक संबंधों तक सीमित कर देते हैं और जो राजपूत राजा इस कालखण्ड से पहले का है उसकी पहचान किसी गैर राजपूत जाति से योजनाबद्ध तरीके से जोड़ देते हैं। उन राजपूत राजाओं को दूसरी जाति का बताकर मूर्ति लगवाना, मीडिया में प्रसारित करना और मूर्ति अनावरण समारोह में श्री वी.के. सिंह, त्रिवेन्द्र सिंह रावत और सतीश सिंह सिकरवार जैसे नेताओं को शामिल कर लेना ताकि यह संदेश जाए कि राजपूत समाज ने भी यह मान लिया है कि मिहिर भोज जैसे राजा उनके नहीं होकर किसी अन्य जाति के हैं। इस पूरी प्रक्रिया में हमारा ध्यान सिर्फ उस जाति तक ही सीमित हो जाता है जो इन राजपूत महापुरुषों को अपना पूर्वज बताने पर तुली है जबकि वो एक मोहरा मात्र है उसकी डोर पीछे से तथाकथित राष्ट्रवादी लोग खींच रहे हैं। जिसका स्वरूप राष्ट्रवादी है पर ये राष्ट्रवादी लोग पहले तो कांग्रेस और वामपंथियों की यह कहकर आलोचना करते रहे कि इन्होंने हिन्दू इतिहास और संस्कृति को मिटाने का काम किया है और वो भी अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के लिए। जब हम लोग (हिन्दू राष्ट्रवादी) सत्ता में आएंगे तब हिन्दू इतिहास और सांस्कृतिक पहचान को पुनर्जीवित कर देंगे और हर तरह के तुष्टिकरण का खात्मा कर देंगे। पर आप देखिए इनकी कथनी और करनी में कितना अंतर है। जब यह लोग सत्ता में आए तबसे इन्होंने राजपूत इतिहास और सांस्कृतिक पहचान को मिटाने का अपना कार्यक्रम शुरू कर दिया और गैर राजपूत जातियों का तुष्टिकरण शुरू कर दिया। कुल मिलाकर हिन्दू अस्मिता और सांस्कृतिक पहचान पर छाती पीटने वाले इन राष्ट्रभक्तों को उस हिन्दू इतिहास में शत-प्रतिशत योगदान देने वाली राजपूत जाति के इतिहास और सांस्कृतिक पहचान की कोई परवाह नहीं है। एक तरह से उन्होंने अब तो यह भी मान लिया है कि राजपूत नाम का कोई भी समूह अस्तित्व में ही नहीं है। हमारी कौम के लोग भी दिन भर सोशल मीडिया पर हिन्दू एकता और राष्ट्रवाद के संदेश फॉरवर्ड करने में व्यस्त रहते है और उनके पास भी समय नहीं है ऐसे राजपूत विरोधी मुद्दों पर सोचने के लिए।

हम लोग विचारधारा का अनुसरण करने वाले भावुक लोग हैं। मध्यकाल में हमने सनातन को अपना आदर्श बनाया और देश जब आजाद हुआ तो एक नया राष्ट्र बनाने के लिए सहर्ष अपनी रियासतें दे दी। आज भी दक्षिणपंथी पार्टी और राष्ट्रवादी संगठनों की गांव-ढाणी तक पहुंच हमने सुनिश्चित की। हमारे आर्थिक संसाधनों और सामाजिक सौहार्द्रता की पूंजी का प्रयोग इन लोगों को राष्ट्र मजूबत करने के नाम पर करने दिया। इनकी विचारधारा को अपना हर तरह से सहयोग किया। यहां तक कि 70 साल तक सत्ता में रहने वाली पार्टी के भी हम इसीलिए खिलाफ रहे क्योंकि हमारी विचारधारा उनसे मेल नहीं खाई। जहां बाकी जातियां अपने आप को मजबूत करती रहीं (भूमि सुधार और आरक्षण के नाम पर) वहीं हम लोग विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध रहे। उसका परिणाम यह है कि आज यह विचारधारा अगर हमारे खिलाफ भी काम करे तो भी हमें महसूस नहीं होता। जबकि लोकतांत्रिक राजनीति प्रतिबद्ध लोगों के लिए अनुकूल नहीं है। यह तो लेन-देन और प्रतिबद्धता में समयानुकूल खेमे बदल लेने की चतुराई है। हम लोगों की वो राजनीतिक कला अभी शैषव अवस्था में है। हमारी भावनात्मक विचारधारात्मक प्रतिबद्धता ने हमारी राजनीति सोच को कभी परिपक्व नहीं होने दिया। मिट्टी के लिए मिट्टी में मिल जाने वाले लोग राजनीतिक कबड्डी में भला इतनी आसानी से पाला कहां बदल पाते हैं? जब 1999 में राजस्थान में हमसे कई गुस्सा आर्थिक रूप से मजबूत जाति को हमारी विचारधारा वाली पार्टी ने ओबीसी का दर्जा दे दिया तब भी हमने पाला नहीं बदला। 2019 में हमारी जाति को जी भरकर गालियां देने वाले व्यक्ति को सांसद बनाने के लिए वोट देने की बात आई तब भी हमने पाला नहीं बदला। उससे पहले आज सत्ता में बैठे लोग जिस समय (1992 और उसके बाद) कुछ भी नहीं थे तब भी हम लोग इनके ही पाले में थे। पर हम राजपूत लोग आर्थिक नुकसान, बड़े पद का त्याग और जमीनों व रियासतों का स्थानांतरण तो झेल सकते हैं पर जिस पहचान (राजपूती इतिहास और संस्कृति) के लिए हम सिर कटवाते आए हैं, अगर यह पहचान ही नहीं रही तो फिर हम सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री का पद लेकर क्या करेंगे। हम मिहिर भोज और पृथ्वीराज को राजपूत से हिन्दू हृदय सम्राट तक प्रचारित करने को यह सोचकर स्वीकार कर लेंगे कि हमारा एक पूर्वज हिन्दू समाज की एकता के लिए जीवित था तब भी काम आया और बलिदान देने के हजार साल बाद भी काम आ रहा है। पर पिछड़ा तुष्टिकरण के नाम पर राष्ट्रवादी लोग हिन्दू पहचान से भी आगे जाकर गुर्जर और अन्य जातियों की पहचान से जोड़ते हैं तब भला हम कैसे सहन कर पाएंगे। किसी विचारधारा के प्रति समर्पण अच्छी बात है पर अपनी पहचान खोकर नहीं। महाराणा प्रताप भी अकबर से समझौता करते तो आज के मुख्यमंत्री से भी बड़ा पद हासिल कर लेते पर उनकी मेवाड़ी पगड़ी और पहचान का क्या हश्र होता? राजनेताओं के लिए पहचान से बड़ा पद होता है पर हम आम राजपूतों के पास पहचान के अलावा है ही क्या? अगर वो भी चली गई तो फिर आपकी आत्मा ही खत्म है। आत्महीन इंसान सिर्फ प्रेतयोनी के ही समान होता है। बहुत पहले तनसिंह साबह ने लिख दिया था 'अब भी क्षत्रिय तुम उठते नहीं फिर आखिर उठ के करोगे क्या'?

आदरणीय, मेरे प्यारे राजपूत भाइयों एवं बहिनों आपको जानकार अत्यन्त खुशी होगी कि आपका भाई जंगली जड़ी-बूटियों से इलाज कर अनेक रोगों से ग्रसित लोगों को रोग मुक्त कर रहा है। मेरे पास रोगी रोग मुक्त हो रहे है। **मैं भंवरसिंह शक्तावत निवासी बेजनाथिया पोस्ट नेतावल महाराज तहसील व जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)** आप राजपूत भाइयों एवं बहिनों को सेवा देना चाहता हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि अपने समाज के अनेक लोग अत्यन्त दयनीय परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में इलाज कराने में असमर्थता हो रही है। यदि आप मुझ से सेवाएं लेना चाहें तो कृपया निम्नलिखित रोगों के लिए सम्पर्क कर सकते हैं।

कैंसर का इलाज विशेष तौर से किया जाता है। दाद, पथरी, श्वास रोग, लकवा, मोटापा कम करना, मस्सा (बवासीर), एलर्जी, पुरानी मार।

सम्पर्क सूत्र : **भंवरसिंह शक्तावत,** मो. 82902-16781

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449

जय श्री बॉयज हॉस्टल

BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target

CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute

विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं

मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि

'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhneyanmandir.org, Website : www.alakhneyanmandir.org

शाखा अमृत

03 अक्टूबर को केन्द्रीय रविवारीय शाखा में पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 222 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि संसार में, समाज में, संघ में जब व्यक्ति काम करता है तब कुछ लोग उसकी प्रशंसा करते हैं तो कुछ आलोचना भी करते हैं। साधना मार्ग में प्रशंसा से अधिक कीमती साधक का लक्ष्य है। समाज द्वारा प्राप्त स्नेह एवं प्रशंसा से अधिक कीमती जीवन का उद्देश्य एवं उसका मूल्य है। संघ कार्य में भी लोगों की प्रशंसा एवं स्नेह से कहीं ज्यादा जरूरी है कि वे लोग हमारे निकट आवें एवं साथ चलें। संघ कार्य में तत्परता एवं लगन से रजोगुणीय कर्मचेष्टा द्वारा ही तमोगुणीय प्रमाद का ह्रास होगा। संघ का होने का दावा करके जो स्वयं कर्म नहीं करते और इस तमोगुणीय प्रमाद को समर्पण की संज्ञा देते हैं, वे भूल में हैं। संघ कहता है वैसा नियमित व निरन्तर कार्य करते हैं तब कर्मठता आती है। कर्मठता आने से ज्ञानोदय होगा और उसी ज्ञानोदय से तमोगुण का ह्रास व सतोगुण का सर्जन होगा। सच्चा समर्पण तभी होगा जब रजोगुणीय कर्म चेष्टा से सतोगुण जाग्रत होगा। प्रश्नोत्तर के दौरान स्वयंसेवकों को समझाते हुए हुए उन्होंने कहा कि किसी कार्य के प्रति भाव का जाग्रत होना समर्पण नहीं है बल्कि वह तभी समर्पण होगा जब हम कर्मरत होंगे। समर्पण होने के बाद भी निरन्तर अन्तरावलोकन होगा तभी धीरे-धीरे साधना मार्ग में विकास होगा। संघ जैसा चाहता है वैसा मैं करूंगा तो वह समर्पण है, लेकिन संघ पर जिम्मेदारी डालकर मैं कुछ ना करूं तो यह प्रमाद है। संघ का कार्य निष्काम भाव से कर्मयोग की साधना और ईश्वर की आराधना का कार्य है।

अर्थबोध शाखा में 30 सितम्बर को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'पी लूँ क्या ये प्याले सारे' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि इस संसार में तीन तत्व सनातन हैं-परमात्मा, प्रकृति एवं जीवात्मा। गीता में श्री कृष्ण ने परमात्मा को पुरुष एवं प्रकृति को स्त्री बताया है। प्रकृति और पुरूष अनादि एवं सनातन है। प्रकृति त्रिगुणात्मक है- सत्व, रज एवं तम। जिन्होंने रजोगुण को शांत कर दिया उनका सतोगुण व तमोगुण स्वतः शांत होगा और ऐसे ही गुणातीत व्यक्ति थे पूज्य श्री तनसिंह जी। इस सहगीत में संसार के प्रति अनासक्ति व ईश्वर के प्रति समर्पण का दर्शन होता है। संसार के विषय भोगों को प्यालों की संज्ञा देकर बताया गया है कि ये रंग बिरंगे, विष कन्या की भाँति सुंदर दिखने वाले हैं लेकिन जहर समान घातक है।। संघ कार्य, साधना मार्ग को अमृत की संज्ञा देकर बताया कि इनमें बाहरी आकर्षण नहीं होने के कारण इस ओर स्वतः आकर्षित नहीं होता। जो बाहरी सौन्दर्य से आकर्षित होते हैं वे भीतरी सौन्दर्य से वंचित रह जाते हैं। परमेश्वर ही सत्य है, संघ का साधना मार्ग ही सत्य एवं पुरातन है जिससे स्वधर्म पालन करते हुए ईश्वर की प्राप्ति संभव है। सांसारिक आर्कषणों में हम इतिहास, परम्पराएं व संस्कृति भूल रहे हैं। संघ के अलावा कौन ऐसी संस्था या कार्यप्रणाली हो सकती है जो गौरवशाली इतिहास वाली कौम को पुनः संसार को मार्ग दिखाने वाला बना सकेगी। इसलिए पूज्य श्री ने स्वयंसेवक को इस गीत में बाहरी सांसारिक आकर्षण की बजाय आन्तरिक तत्व की ओर आकर्षित होकर ईश्वर की ओर बढ़ने की बात कही है। 7 अक्टूबर को 'मुझे न तुमसे गिला है कोई' सहगीत पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह सहगीत किसी कारण से विवश होकर संघ से जाने वालो के लिए है। पूज्य श्री जाने वाले साधक को कहते हैं कि तुम मुझे (संघ को) छोड़कर जा रहे हो लेकिन मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है। संघ की साधना बड़ी कठिन है जिस पर कई आए और कई गये तो कई निरन्तर साधनारत है। पूज्य श्री आगे कहते हैं कि यहाँ से जाना कभी भी सुखदायक नहीं हो सकता। जो निस्वार्थ भाव से कल्याणकारी कार्य करता है उसकी दुर्गति कभी नहीं होगी। भले ही तुम मुझे, मेरे संघ कार्य को छोड़कर जा रहे हो लेकिन मैं सदैव तुम्हारे कल्याण की कामना करूंगा। स्वार्थरूपी संसार में भले ही थोड़े समय के लिए ही साधना मार्ग पर चल कर तुमने पूर्वजों के ऋण को चुकाया वो भी कम नहीं है। स्वाभाविक कार्य में प्रयत्न की आवश्यकता नहीं होती और देना हमारे स्वभाव में ही है अतः हमने जीवन ही दे दिया है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि देना मेरा कर्त्तव्य है, ऐसा मानकर जो देता है वही सच्चा दान है। मेरा स्वभाव है कि देने का अवसर मिला है तो देना ही है। देना मेरा कर्तव्य और लेना तुम्हारा अधिकार है। यदि कोई मेरी सेवा करता है तो जो करने वाला है वो कर्त्तव्य मानकर करता है और मैं यह मान लूं कि उसे मेरी सेवा करनी ही चाहिए तो समझ लो मझधार में मेरी नैया डूब गई। पूज्य श्री जाने वाले को हँसते रहने का आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि तुम्हारी हिस्से की जिम्मेदारी मुझे संभालनी पड़ेगी लेकिन मुझे इस बात का कोई गम या दुःख नहीं है क्योंकि यह ईश्वर का काम है और ईश्वर की कृपा होगी वही करेगा। ईश्वर अवसर देता है और जो अवसर का लाभ उठायेगा उसका कल्याण होगा।

10 अक्टूबर को डायरी के अवतरण संख्या 391 पर चर्चा करते उन्होंने बताया कि भगवान को या किसी अन्य उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्वयंसेवक के लिए चार कसौटियां है। पहली है आर्त अर्थात उसे प्राप्त करने की व्याकुलता हो। दूसरी अर्थार्थी अर्थात प्राप्त वही कर सकता है जिसे अभाव है। तीसरी जिज्ञासु अर्थात जिसे प्राप्त करना है या जानना है, उसके प्रति जागरूक होकर संकल्प के साथ जानने का प्रयत्न करना। चौथी है ज्ञानी अर्थात यह ज्ञान होना कि जिसे वह प्राप्त करना चाहता है उसी से व्यष्टि से समष्टि एवं समष्टि से परमेष्टि की प्राप्ति संभव है। उक्त कसौटियों पर निरन्तर अपने आपका आकलन करने वाला ही संघ की साधना में बढ़ेगा। स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान जरते हुए आगे उन्होंने कहा कि ईश्वर या कोई अन्य महान उद्देश्य तभी प्राप्त होना संभव है जब हमारे अन्दर उसे प्राप्त करने की तड़फन होगी और प्राप्ति की तड़फन या भूख तब होगी जब उसका अभाव होगा। विपुलता में रहने वाले में भी यदि अभाव होगा तो वह प्राप्ति के लिए व्याकुल होकर उसे प्राप्त करने के लिए कोशिश करेगा। व्याकुलता होने पर प्राप्ति की बात न करके उस व्याकुलता को शांत करने के लिए कर्मशील होना चाहिए। कर्म ही किसी भी लक्ष्य को हमारी पहुंच में ला सकता है। कर्मठता के अभाव में लक्ष्य की ओर गति असंभव है।

(पृष्ठ एक का शेष)

इतिहास...

त्याग, बलिदान, धैर्य, दक्षता, संघर्षप्रियता, ईश्वरीय भाव आदि गुणों का अपनी सामूहिक संस्कार मयी कर्मप्रणाली द्वारा अभ्यास करवाता है। उन्होंने राणा पूंजा जी के त्याग व बलिदान को नमन करते हुए कहा कि हमारे महापुरुषों को हम याद करेंगे, प्रेरणा लेंगे व उनका अनुकरण करेंगे तो राजनीतिज्ञों द्वारा उनके नाम का दुरुपयोग रुकेगा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राणा पूंजा के वंशज भंवर परीक्षित सिंह पानरवा ने राणा पूंजा व उनका इतिहास बताते हुए मेवाड़ से उनके संबंधों का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार सत्ता के बल पर उनके पूर्वज राणा पूंजा को राजनेताओं ने जातिगत तुष्टिकरण के तहत भील के रूप में प्रचारित किया एवं कैसे उनके परिवार व सहयोगियों के विरोध को दरकिनार कर दिया गया। वे राणा पूंजा की सही पहचान को बरकरार रखने के लिए किस प्रकार प्रयासरत हैं यह भी बताया एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित कर जिस प्रकार उनकी मुहिम को संबल प्रदान किया है, उसके लिए आभार प्रकट किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं पूर्व सांसद नारायण सिंह जी माणकलाव ने स्वयं के जीवन का उदाहरण देते हुए बताया कि उनके जीवन की संपूर्ण श्रेष्ठताएं श्री क्षत्रिय युवक संघ की देन है। संघ व्यक्ति निर्माण की अनुठी पाठशाला है, हम सबको अपने सामाजिक भाव व पीड़ा को उपयुक्त दिशा देने के लिए संघ के शिक्षण को प्राप्त करना चाहिए। संघ हमारे समाज की महत्ती आवश्यकता है इसे प्रत्येक समाज बंधु को समझकर तदनुसार सहयोग करना चाहिए। संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने राणा पूंजा के इतिहास की जानकारी देते हुए बताया कि सिरोही के कैलाशनगर से सोलंकियों के कुछ परिवार देसुरी क्षेत्र में आये एवं कुछ परिवार1478 ई. में अखैराज जी के नेतृत्व में भोमट क्षेत्र में गये और पानरवा पर अधिकार किया। इन्हीं रावत अखैराज जी के वंशज राणा पूंजा थे। पानरवा के सोलंकी मेवाड़ के सदैव सहयोगी बने रहे हैं। पूंजाजी के दादा हरपाल ने महाराणा उदयसिंह जी की सहायता की तब उन्हें राणा की उपाधि दी गई। राणा पूंजा महाराणा प्रताप के सहयोगी थे एवं इनके वंशज राणा चंद्रभान ने महाराणा राजसिंह जी का महत्वपूर्ण सहयोग किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा ने हीरक जयंती वर्ष के तहत आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला की जानकारी दी। स्थानीय सहयोगी श्रवणसिंह सांसरी, जितेंद्र सिंह मगरतलाव ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। रूप कंवर मेवी कलां ने इतिहास निर्माण में महिलाओं के उल्लेखनीय योगदान के बारे में बताते हुए कहा कि क्षत्रिय मातृशक्ति त्याग और बलिदान की पर्याय रही है एवं इन्होंने हर कदम पर पुरुषों का भरपूर सहयोग किया है। उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम में महिलाओं की संख्या लगभग पुरुषों के बराबर रही जिसने सभी को प्रभावित किया। कार्यक्रम के बाद सहभोज की व्यवस्था की गई जिसका संपूर्ण दायित्व स्थानीय समाज बंधुओं ने वहन किया। देसुरी एवं कुंभलगढ़ के आस पास के गांवों में निवासरत सोलंकी समाज बंधुओं ने इस संपूर्ण कार्यक्रम के प्रचार से लेकर आयोजन तक की समस्त जिम्मेदारी का स्वतः स्फूर्त निर्वहन किया जो हम सबके लिए प्रेरणादायी है। राणा पूंजा जी सोलंकी की जयंती बैंगलोर प्रांत द्वारा चामुण्डा माता मंदिर राणासिंहपेट में सामुहिक शाखा में भी मनाई गई व वीर योद्धा को पुष्पांजलि दी गई।

मेवाड़ क्षत्रिय महासभा उदयपुर के चुनाव

2 अक्टूबर को मेवाड़ क्षत्रिय महासभा जिला उदयपुर के जिला कार्यकारिणी के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हुए जिनमें जिलाध्यक्ष - बावजी लवदेव सिंह कुराबड, उपाध्यक्ष - श्री ओनार सिंह फांदा, महामंत्री - डॉ कमलेन्द्र सिंह बेमला, संयुक्त मंत्री - श्री कुन्दन सिंह मुरोली, कोषाध्यक्ष - श्री सज्जन सिंह सुलावास आदि पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ।

(पृष्ठ एक का शेष)

नोखा...

इससे पूर्व पारवा गांव में सरपंच का चुनाव लड़ चुके जितेंद्र सिंह को गांव के आम चौक पर मार दिया गया। इन सब घटनाओं के पीछे मौजूद इस नापाक गठबंधन के खिलाफ श्री प्रताप फाउंडेशन ने मुख्यमंत्री महोदय को पत्र लिखकर उच्च स्तरीय जांच करवाकर दोषियों को सजा देने की मांग की। सहयोगियों द्वारा प्रदेश भर में इस पत्र की प्रतियां ज्ञापन के रूप में स्थानीय प्रशासन को दी गई।

गजेन्द्रसिंह महरोली को मातृशोक

श्रीमती मोहन कंवर

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक शंकरसिंह जी महरोली की धर्मपत्नी एवं केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह महरोली की माताजी **श्रीमती मोहन कंवर** जी का 10 अक्टूबर को देहावसान हो गया। वे लंबे समय से बीमार थीं व दिल्ली एम्स में भर्ती थीं। उनका दाह संस्कार 11 अक्टूबर को जोधपुर में किया गया जिसमें जोधपुर शहर व प्रदेश भर से सैंकड़ों लोग शामिल हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह रोलसाहबसर व संघप्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास भी अपने साथियों सहित अंतिम यात्रा में शामिल हुए।

(पृष्ठ एक का शेष)

संघ के... यह समस्या आपके सामने आएगी और आप मान भी जाएंगे। प्रधान हमारा है तो जिला प्रमुख भी हमारा होना चाहिए। कांग्रेस के अन्य जातियों के नेता आप पर यह दबाव डालेंगे कि जब तक कड़ी से कड़ी नहीं जुड़ेगी तब तक हम राज में नहीं पहुंच सकते और आपको यदि राज में जाने की जल्दी होगी तो आप मान जाएंगे। ऐसा ही भाजपा के साथ भी है। ऐसा कई बार देखा है - अपने ही आदमी अपने ही लोगों को दबा करके दूसरों को जिता देते हैं क्योंकि वह उनके पार्टी के हैं। भले राजपूत नहीं है लेकिन कोई और है उसको इसलिए जिताते हैं कि वह हमारे काम आएगा। इस प्रकार की भावनाओं से संघर्ष आपको करना पड़ेगा और जो संघर्ष से डरता है वह क्षत्रिय नहीं होता है। संघर्षप्रियता गीता में बताए गए क्षत्रियों के सात गुणों में से एक गुण है- युद्ध से ना भागना। युद्ध और संघर्ष एक ही चीज है। यदि हम गीता को ढंग से पढ़ लें और इन सातों गुणों के बारे में समझ लें कि राजपूत कौन है? क्षत्रिय कौन है? तो वहीं से शुरू करके अंतरावलोकन करें कि क्या हम क्षत्रिय हैं? गीता के अनुसार क्षत्रिय का पहला गुण है शौर्य। सोचें कि हममें क्या शौर्य है? पार्टियां बदलने का, मौका देखकर लाभ उठाने का? अपना अंतरावलोकन करें कि मैं राज में जाने के लिए कितनी बड़ी भूल कर रहा हूं और मेरा शौर्य गलत मार्ग पर तो नहीं जा रहा है। दूसरा है - तेज। कोई जमाना था कि राजपूत के, ठाकुर के सामने कोई देख नहीं सकता था। इसलिए नहीं कि वह ठाकुर है बल्कि इसलिए कि उनमें ऐसा तेज होता था। उनकी वाणी में तेज होता था, उनके आचरण में, चरित्र में तेज होता था। हम विचार करें कि मेरा चरित्र कैसा है तो हमें पता चल जाएगा कि हम क्या कर रहे हैं। राजपूतों की बात करते हैं, क्षत्रियों की बात करते हैं लेकिन ना शौर्य है ना तेज है। तीसरा गुण है - धैर्य। आज कोई कह रहा था कि राजनीति में रहना है तो धैर्य रखना पड़ेगा। किसी को टिकट या प्रतिनिधित्व मिलने के अनेकों कारण होते हैं उनको ना समझने के कारण हम अपने लिए जिद करते हैं। मेरा सुझाव तो यह है कि जो भी व्यक्ति जिस पार्टी में हैं उसके प्रति वफादार रहे। क्योंकि वफादारी राजपूत का गुण है। इसलिए धैर्य रखें। चौथा है - दक्षता। दक्ष उसको कहते हैं जो कुशलता पूर्वक कार्य कर सके। कुशलतापूर्वक कर्म करने का मतलब है कि उसमें फिर ढील-ढाल नहीं होनी चाहिए। निर्णय बार-बार बदलना नहीं चाहिए। पांचवा है - युद्ध से ना भागना। किसी भी प्रकार की कठिनाई आ जाए, राजनीति में रहना है तो जिस पार्टी को पकड़ा है अंत तक बने रहें। गीता में भगवान यहां तक कहते हैं कि पिछले जन्म में जो कर्म किया है उसका प्रारब्ध इस जन्म में भोग रहे हैं और इस जन्म में जो किया है वह अगले जन्मों में भोगना पड़ेगा। इसलिए संभव है कि एक दो जन्मों में ही हमें सफलता न मिलें। श्री क्षत्रिय युवक संघ तो इसी तरह के धैर्य के साथ चलता है कि इस कार्य में शताब्दियां लग सकती हैं। कई विद्वानों व संतों ने कहा है कि जहां राजपूत शासक नहीं है वहां रहना ही पाप है। उन्होंने अपनी अनुभूति से कहा है। लेकिन शासक कैसा हो? कोई कहते हैं कि राजपूत तो पैदा ही राज करने के लिए हुआ है लेकिन राजपूत तो हैं यह निश्चित है क्या? राजपूत तो वह है जो दूसरों की रक्षा करता है, दूसरों को सुविधा प्रदान करता है और अन्यों को देने के बाद जो बच जाए उससे निर्वाह करता है। लेकिन आज हम सबसे पहले अपना पेट भरना चाहते हैं। इसके लिए यदि हम गलत रास्ता अपनाते हैं तो हमारी रजपूती नहीं बचेगी। सोचें कि रजपूती रखनी है या राजनीति करनी है। यह सब समस्याएं आपके सामने आयेंगी, उनसे मैं आपको आगाह कर रहा हूं। इस संसार में, आपने जो फैसला लिया है मैं उसी का उदाहरण देकर के कहता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी के सामने झुकता है। कोई देवी के सामने, कोई देवता के सामने, कोई गुरु के सामने तो कोई किसी और के सामने। लेकिन यदि झुकना ही है तो परमेश्वर के सामने झुकें। लेकिन हम परमेश्वर को जानते नहीं हैं। गीता में भगवान कहते हैं कि मैं प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता हूं लेकिन हम उसको ना देख कर बाहर देख रहे हैं। हम स्वयं को देखें, अपने आत्म बल पर भरोसा करें तो भगवान भी कोई दूर नहीं है लेकिन हमारा अपना विश्वास बनता नहीं है और थोड़े से समय में शॉर्टकट रास्ता ढूंढते हैं। मेरी बात शायद आपको ना जँचे क्योंकि आपको तो जल्दी है। लेकिन जो जल्दी करता है वह धोखा खाता है। उसको खाने के लिए तैयार हैं तो आप चाहे किसी भी दल में हों कोई अंतर नहीं पड़ता। सिद्धांत सबके अच्छे हैं लेकिन आचरण किसी का अच्छा नहीं है। ना कांग्रेस का अच्छा है न बीजेपी का अच्छा है। एक दूसरे की बुराइयां करने के अलावा इनके पास कोई विषय नहीं बचा है। लेकिन फिर भी राजनीति में तो जाना ही पड़ेगा। राजनीति तो भगवान कृष्ण ने भी की थी, राज तो भगवान राम ने भी किया था। बुद्ध और महावीर ने तो राज करके भी त्याग दिया था लेकिन राम और कृष्ण ने त्यागा नहीं। उन्होंने संघर्ष किया था। हम उन महापुरुषों की संतान हैं तो हम संघर्ष करें। अच्छे के लिए संघर्ष करें तो अच्छा ही होगा। सबसे बड़ा है भगवान। उसके नजदीक हम कैसे पहुंच सकते हैं? चौरासी लाख योनियों में एक ही योनि है जो कर्म योनि है बाकी सब भोग योनि है। केवल मनुष्य के पास पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ का बल हमें भगवान ने दिया है तो हम पुरुषार्थ करके इस संसार को सुख पहुंचाएं। संसार को सुख पहुंचाना ही ईश्वर का काम है और जो ईश्वर का काम करता है वह ईश्वर ही बन जाता है। मैं आपसे यही निवेदन करता हूं कि ईश्वर बनो। इसमें थोड़ा पसीना आता है, संघर्ष करना पड़ता है। ऐसा संघर्ष हम करके बताएं तब हमारी कोई विशेषता है। हमारे हाथ में अपने आप को बदलना है और जिसने अपने आप को बदल लिया वह संसार को पार कर जाता है। इसीलिए तनसिंह जी ने कहा कि -'निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता।' हम दुनिया को लाभ पहुंचाने की बात कर रहे हैं लेकिन अपना लाभ नहीं जानते तो दुनिया को नहीं बदल सकते। हमारा लाभ उसी में है जिससे भगवान प्रसन्न रहें। अन्यों की प्रसन्नता में उलझ गए तो भगवान को नहीं पा सकते। मेरा तो न्योता है कि आओ हम सब भगवान बन जाएं। जय संघ शक्ति।।

राजपूत... बैठक के प्रारंभ में श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ और श्री प्रताप फाउंडेशन का परिचय दिया। विचार गोष्ठी के विषय को स्पष्ट किया गया और फिर सभी के विचार आमंत्रित किए गये। मुख्य रूप से सभी ने बताया कि हमें समाज में कांग्रेस के प्रति नकारात्मकता को दूर करने का प्रयास करना चाहिए, कांग्रेस पार्टी के मंच पर समाज द्वारा किए जा रहे सहयोग को उल्लेखित करना चाहिए और मजबूती से समाज का पक्ष रखना चाहिए। हमारे समाज के प्रदेश स्तरीय नेताओं से निरंतर संपर्क रखना चाहिए और पीछे पड़कर लोगों के काम करवाने चाहिए। मंत्रियों एवं बड़े नेताओं के प्रति शिकायत को लेकर हुई चर्चा में निकल कर आया कि हमें अधिकार पूर्वक काम करवाने का प्रयास करना चाहिए और उनकी भी व्यवहारिक परेशानियों का ध्यान रखना चाहिए। समाज से जुड़े विषयों पर पार्टी के भीतर एकजुट होकर मुखर होना चाहिए ताकि हम समाज के समक्ष भी मजबूती से पार्टी का पक्ष रख सकें। अंत में माननीय संरक्षक भगवानसिंह रोलसाहबसर का आशीर्वाद मिला एवं सभी ने ऐसा अवसर उपलब्ध करवाने के लिए श्री प्रताप फाउंडेशन का आभार जताते हुए पुनः पुनः ऐसे अवसरों का लाभ लेने के संकल्प के साथ विदाई ली।

कैसे बदली... सन् 1567 ई. में मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह द्वारा चित्तौड़ त्यागने के बाद जब मुगल सेना ने उनका पीछा किया उस समय महाराणा उदयसिंह ने स्वयं की रक्षा के लिए भोमट क्षेत्र के पहाड़ी व घने वनीय भाग में शरण ली। उस समय पानरवा ठिकाने के शासक हरपाल ने उनके परिवार की सुरक्षा व सेवा की, इसी से प्रसन्न होकर उन्होंने उनको राणा की उपाधि प्रदान की। उसके बाद हरपाल के उत्तराधिकारी पानरवा के अधिपति 'राणा' कहलाये। रावत अखैराज की छट्ठी पीढ़ी में राणा पूंजा हुए। वे राणा हरपाल के पौत्र और राणा दुदा के पुत्र थे तथा राणा पूंजा के पुत्र राणा राम एवं पौत्र राणा चन्द्रभान ने भी मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह व महाराणा राज सिंह को औरंगजेब के विरुद्ध सहयोग किया। विगत कुछ दशकों में जातीय तुष्टिकरण की राजनीति के तहत राणा पूंजा को भील समुदाय में उत्पन्न होना बताकर दुष्प्रचार किया गया और पाठ्यपुस्तकों में भी कुछ इतिहासकारों ने बिना किसी प्रमाण के उन्हें भील घोषित कर दिया। राणा पूंजा को भील बताने की शुरूआत वैसे तो 80 के दशक के आस-पास हो गई थी लेकिन ये मामला ज्यादा प्रकाश में उदयपुर नगर के मोती मगरी स्थित प्रताप स्मारक पर तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी द्वारा राणा पूंजा की मूर्ति के वर्ष 1989 में अनावरण के साथ आया। इस मूर्ति के परिचय में उन्हें भील बताया गया था तथा वेशभूषा भी भील जाति की ही प्रदर्शित की गई थी। इस मूर्ति के अनावरण के समय भी यह विवाद खूब उठा था। इसके बाद दूसरी बार ये विवाद वर्ष 1997 में तब उठा था जब पानरवा में राणा पूंजा की भील वेशभूषा में एक मूर्ति का अनावरण करने भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति के.आर. नारायण आने वाले थे और इस मूर्ति का अनावरण कार्यक्रम राजस्थान सरकार ने रखा था। उस कार्यक्रम को लेकर मेवाड़ राजघराने के महाराणा महेंद्रसिंह मेवाड़ ने भारत के राष्ट्रपति को पत्र लिखकर इस सम्बन्ध में अपनी आपत्ति दर्ज करवाई थी। इसके अलावा राणा पूंजा के वंशज पानरवा राजघराने के राणा मनोहरसिंह सोलंकी, महाराज रणधीर सिंह भिंडर, राव कर्णसिंह ओगना, राव हिम्मतसिंह नैनबारा, मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष महेंद्रसिंह आगरिया एवं भूपाल नोबल संस्थान के भूतपूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष तेजसिंह बांसी ने तत्कालीन मुख्यमंत्री से मिलकर पानरवा में मूर्ति स्थापना के विवाद के विषय में ऐतिहासिक तथ्यों के साथ अपनी मनोभावना स्पष्ट रूप से बताई थी। उसी समय स्वतंत्रता सेनानी, भूतपूर्व सांसद एवं भारत की संविधान निर्मात्री परिषद के सदस्य श्री बलवन्तसिंह मेहता ने तत्कालीन राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत द्वारा भीलू राजा राणा पूंजा के नाम से पानरवा में मूर्ति स्थापित करने की कार्यवाही को लेकर कड़ा विरोध जताया था। 1989 में स्व. राजीव गांधी द्वारा उदयपुर में प्रताप स्मारक पर जब इसी प्रकार की मूर्ति के अनावरण की कार्यवाही चल रही थी तब भी श्री मेहता समेत प्रदेश के कई बड़े इतिहासकारों ने मेवाड़ के इतिहास को झुठलाने वाली इस कार्यवाही का विरोध किया था। उस समय श्री मेहता ने भैरोसिंह शेखावत से कहा था कि 'आपकी सरकार एक ऐतिहासिक गलती करने जा रही है जो भविष्य में बहुत बड़ा विवाद पैदा करेगी।' बलवन्तसिंह मेहता द्वारा प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर इस बात का आग्रह किया गया था कि सरकार केवल कल्पना अथवा अनुमान का सहारा नहीं लेकर वास्तविक सत्य को मालूम करने हेतु जाँच करवाए। लिखे गए पत्रों की प्रतिलिपियां आज भी मौजूद हैं। इस पत्र के बाद दिल्ली से मणिशंकर अय्यर जाँच करने हेतु उदयपुर आये थे और मेहताजी व मेवाड़ के प्रमुख विद्वानों से मिले थे। उसके कुछ समय बाद प्रताप स्मारक पर स्थापित मूर्ति से आपत्तिजनक शब्दों को हटा दिया गया था। उसी समय मेवाड़ के प्रतिष्ठित इतिहासकार डॉ. राजशेखर व्यास, डॉ. देवीलाल पालीवाल, देव कोठारी, स्वरूपसिंह चुंडावत, ओंकारसिंह राठौड़ और प्रो. प्रद्युम्न सिंह चुंडावत ने ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर बताया कि राणा पूंजा सोलंकी महाराणा प्रताप के समकालीन थे। राणा पूंजा मेवाड़ और मुगल सेनाओं के मध्य हुए इतिहास प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध मे अपनी भील सेना के साथ मेवाड़ की स्वतंत्रता के रक्षार्थ लड़े थे। उदयपुर स्थित प्राच्य विधा प्रतिष्ठान में उपलब्ध ग्रन्थ क्रमांक 2680 भोमट राज्य का इतिहास हस्तलिखित ग्रन्थ में पानरवा और ओगना ठिकानों के सरदारों का सोलंकी राजपूत होना लिखा है। प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने भी अपने इतिहास ग्रंथ 'एनल्स एंड एंटीक्विटिज ऑफ राजस्थान' में मेवाड़ भू भाग के भोमिया जागीरदारों का सोलंकी राजपूत होना बताया है। कर्नल टॉड की तरह जे.सी. बुक्स ने भी अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ मेवाड़' में पानरवा और ओगना के ठिकानेदारों का सोलंकी राजपूत होना बयान किया है। यहां तक कि महाराणा भूपाल सिंह जी के समय सर सुखदेव द्वारा लिखा गया मेवाड़ का गजेट भी यही बात करता है। ऐसी स्थिति में पानरवा ठिकाने के जागीरदार अथवा राणा की परम्परा में जन्म लेने वाले राणा पूंजा को आदिवासी क्षेत्र के होने की वजह से ही भील कह देना सर्वथा अनुचित है। भील समुदाय में पूंजा नामक किसी भील नायक का होना इतिहास में नही पाया जाता जिसको कभी किसी महाराणा ने 'राणा' की उपाधि दी हो। प्राचीन पोथियों एवं वंशावलियों में केवल पानरवा के सोलंकी अधिपति को ही 'राणा' की उपाधि दिए जाने का उल्लेख है। किसी 'भीलू राजा' का होने का उल्लेख भी कहीं नही मिलता। पानरवा के राणा पूंजा के संदर्भ में अब तक प्राचीन हस्तलिखित पोथियां एवं मेवाड़ के महाराणाओं द्वारा दिये गये सम्मान व अन्य सभी ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है वह सभी राणा पूंजा को सोलंकी राजपूत होना ही सिद्ध करते है। पानरवा पर भील जाति के आधिपत्य का अथवा राणा पूंजा का भील वंश से सम्बंधित होने का एक भी ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नही है। 'भीलू राजा' नाम का उपयोग भी पिछले कुछ वर्षों से किया जाने लगा है जिसका व्यवहारिक दृष्टि से कोई अर्थ नहीं है। केवल राणा पूंजा को भील सिद्ध करने की दृष्टि से 'भीलू राजा' नाम को गढ़ा गया है। पुरानी पोथियों, शिलालेख, पत्रावलियों, वंशावलियों तथा इतिहास ग्रंथो में राणा पूंजा सोलंकी को कहीं भी 'भीलू राजा' संबोधित नहीं किया गया है। राणा पूंजा सोलंकी को भील बताये जाने पर उनके वंशजों ने एक लंबी लड़ाई लड़ी है और आज भी वे इस लड़ाई को लड़ रहे हैं। पानरवा ठिकाने के भँवर परिक्षितसिंह सोलंकी कहते हैं कि 'जहाँ कहीं पर भी राणा पूंजा को भील बताकर सरकारों ने उनकी भील वेशभूषा वाली मूर्ति लगाने का बड़े स्तर पर प्रयास किया गया था वहाँ हमारा परिवार उन सभी प्रयासों के विरुद्ध अपनी कड़ी आपत्ति दर्ज करवाने के साथ इसे इतिहास को विकृत करने की प्रवृत्ति बताता रहा है।' इस प्रकार राणा पूंजा को भील बताना इतिहास विरुद्ध तथा सत्य को नकारता है साथ ही एकता का प्रतीक रहे भोमट क्षेत्र का सौहार्द नष्ट करता है। - **वीर बहादुर सिंह असाडा**

'संघ का शंखनाद : जागे और जगाए'

किसी को जगा वही सकता है जो स्वयं जागा हुआ हो। अगर हमें नई क्रांति की शुरूआत करनी है तो इस आलस्य को छोड़ना होगा। इसलिए यह समय सोने का नहीं जागने का है। संघ हमें जगाने का प्रयास कर रहा है। जब कोई वस्तु अनुपयोगी हो जाती है तो उसे फेंक दिया जाता है क्योंकि उसका कोई हेतु ही नहीं रह जाता। हमें जिस कुल में भगवान ने जन्म दिया है उसका भी कुछ हेतु है क्योंकि बिना हेतु कोई निर्माण नहीं होता। हम हमारा कर्तव्य समझे, उस कर्तव्य के अनुरूप अपने जीवन को जिएं तभी हमारे अस्तित्व का हेतु सिद्ध होगा। आप कर क्या सकते हैं, आपका सामर्थ्य और शक्ति क्या है, उसको पहचानने की जरूरत है। जिस तरह से हनुमान जी को अपनी शक्ति का एहसास नहीं था पर जामवंत द्वारा अपनी शक्ति का स्मरण दिलाने पर उन्होंने अपने सामर्थ्य को पहचाना। उसी प्रकार से हमारे समाज में भी हजारों की संख्या में हनुमान उपस्थित हैं लेकिन उनके अंदर विराजित शक्ति को टटोलने और जागृत करने की जरूरत है। हम कुछ कर नहीं सकते - यह अकर्मण्यता का भाव कहां से आया? हम इतने वर्षों से सोए हुए हैं आखिर कब जागेंगे? संघ शंखनाद करके हमें जगाने का प्रयास कर रहा है। हमें बता रहा है कि अपनी शक्ति को पहचाने और अपना सामर्थ्य बढ़ाएं बिना कुछ हासिल नहीं होने वाला। आज हम वीर जुझार पनराज जी को क्यों याद कर रहे हैं? हमारे उन पूर्वजों ने अपना सर्वस्व लुटा दिया केवल इस धरती के लिए ही नहीं, केवल गौ माता के लिए ही नहीं अपितु संसार के लिए। उन्होंने अपने सुखों का त्याग कर स्वयं दुखों को आमंत्रित कर कष्टों में संघर्ष किया। अपने स्वाभिमान पर आंच नहीं आने पाए इसलिए जीवन पर्यंत लड़ते रहना यही हमारी परंपरा रही है। उपरोक्त बातें पनराजसर में 10 अक्टूबर को आयोजित वीर जुझार पनराज जयंती कार्यक्रम के दौरान माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने अपने संबोधन में कही। उन्होंने कहा कि आज हम वीर पनराज जी को याद करने के लिए एकत्रित हुए हैं। यह आपकी सामाजिक भावना ही है जो आपको यहां खींच लाई है। पनराज जी ने जो त्याग किया था उसी का यह परिणाम है कि आज हजारों लोगों की उनके प्रति श्रद्धा उमड़ रही है। ऐसे वीर जिनका सर कट जाए और मीलों तक धड़ लड़ता रहे, उन वीरों की यह श्रेष्ठ कौम है जिसमें हमने जन्म लिया है। यह हमारा बड़ा सौभाग्य है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वामी प्रतापपुरी ने कहा कि आप लोगों के बीच यह पवित्र धारा आई है इसका रसपान कर लीजिए। यह मौका हाथ से ना चूक जाए। श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्कार निर्माण का कार्य करता है। संघ आपको बताता है कि हमारा जीवन क्या है? हमारा इतिहास क्या है? हमारी संस्कृति और सभ्यता क्या है? उन्होंने आह्वान करते हुए कहा कि अपने बच्चों को और बालिकाओं को संघ के शिविरों में भेजें क्योंकि यही कल का भविष्य है। हमारी संतान श्रेष्ठ होगी तो आने वाली पीढ़ी भी श्रेष्ठ होगी। अगर हम सब लापरवाही में ही रहेंगे तो जो चाहते हैं वह प्राप्त नहीं होगा। मानव देह में हमें जन्म मिला है इसलिए उसे अच्छे कार्य में लगाएं। जैसी हमारी संगत होगी वैसा ही हमारा जीवन होगा इसलिए संगत अच्छी होनी चाहिए। कार्यक्रम के प्रारंभ में संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली की जानकारी देते हुए संभाग प्रमुख तारेन्द्र सिंह झिंजनियाली ने कहा कि संघ के हीरक जयंती वर्ष में विभिन्न स्थानों पर इस तरह के आयोजन हो रहे हैं जो हमारी सामाजिक शक्ति को बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। पनराज सेवा समिति के अध्यक्ष गोवर्धन सिंह ने यहां प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले मेले के बारे में जानकारी दी एवं पधारे हुए सभी लोगों को धन्यवाद दिया। संघ की स्वयंसेविका हेमा जोगा ने भी अपने विचार रखें और बालिकाओं को संघ में जुड़ने का आहवान किया। दीप सिंह रणधा द्वारा वीर पनराज पर काव्य छन्द प्रस्तुत किया गया। लीलू सिंह द्वारा जुझार वीर पनराज जी का इतिहास, वंशावली एवं वर्तमान में कहां-कहां इनके वंशज रहते हैं, के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में निर्जन भारती, ब्रह्म पूरी, जिला प्रमुख प्रताप सिंह रामगढ़, पूर्व विधायक सांग सिंह, पूर्व विधायक छोटू सिंह, पूर्व जिला प्रमुख अंजना मेघवाल, पूर्व प्रधान मूला राम चौधरी, विक्रम सिंह नाचना सहित बड़ी संख्या में क्षेत्र के गांवों से मातृशक्ति सहित सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे संघ साथी

देवेंद्र प्रताप सिंह

सुपुत्र - मगसिंह जी चंपावत

ठिकाना-वाडिया, जिला-पाली के राजस्थान सरकार के
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग में चयनित होकर
सार्वजनिक निर्माण विभाग में जनसंपर्क अधिकारी के
पद पर **पदस्थापित** होने पर
हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छुः

महिपाल सिंह गुड़िया, प्रदीपसिंह आबड़सर, अरिहंत सिंह चरड़ास,
इन्द्रजीत सिंह मोरूआ, अजयपाल सिंह गुड़ा पृथ्वीराज,
बसंतसिंह बरसिंहपुरा, शैलेन्द्र सिंह उथमण, जितेन्द्रसिंह मेसिया,
श्रीपालसिंह मादड़ी, वीर बहादुर सिंह असाडा

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org